डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 31/07/20

विषय- संस्कृत, बी०ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र
किरातार्जुनीयम् - प्रथम सर्ग
पद्यांश व्याख्या

असक्तमाराधयतो यथायथम्
विभज्य भक्त्या समपक्षपातया ।
गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान्
न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम् ॥11॥

अन्वयः- यथायथं विभज्य समपक्षपातया भक्त्या असक्तम् आराधयतः अस्य त्रिगणः, गुणानुरागात् सख्यम् ईयिवान् इव परस्परं न बाधते ।

भाषार्थ- (यथायथं विभज्य) धर्म, अर्थ और काम के के स्वरूप के अनुसार विभाजन करके (समपक्षतया भक्त्या) सब पर समान पक्षपातपूर्ण भक्ति से (आसक्ति से) (असक्तम् आराधयतः अस्य) किसी एक में विशेष रूप से लिप्त (आसक्त) न होकर सेवन करने वाले इस सुयोधन के (त्रिगणः) धर्म, अर्थ तथा काम तीनों का समूह (गुणानुरागात् सख्यम् ईयिवान् इव) उसके गुणों के अनुराग के कारण मित्रतासी प्राप्त करके अर्थात् सामञ्जस्य के साथ (परस्परं न बाधते) एक दूसरे की वृद्धि में बाधा नहीं पहुँचाता है।

भावार्थ- इस पद्य में सुयोधन के धर्म, अर्थ और काम के निर्विरोध विस्तार का वर्णन किया गया है। अर्थात् उसका सुखोपभोग धर्म के विपरीत नहीं है। अर्थ व्यवस्था भी धर्म के

Scanned with CamScanner

प्रतिकूल नहीं है, तीनों में सामञ्जस्य है और वे एक दूसरे के विपरीत नहीं हैं। इसमें प्राचीन भारतीय जीवन आदर्श धर्म, अर्थ, काम के सन्तुलन के मार्ग का वर्णन किया गया है। ये तीनों मोक्ष के कारण हैं और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को पुरुषार्थ चतुष्टय कहते हैं।

पदव्याख्या - असक्तम - अनासक्त होकर, ध्यान में न पड़कर, न सक्तम असक्तम (नञ्)। सक्तः = सञ्ज + क्त (कर्तरि) असक्तं यथा स्यात्तथा (क्रियाविशेषण)। आराधयतः = सेवन करते हुए (अस्य का विशेषण) आ + राध् + शतृ = आराधयन्, तस्य। यथायथम = स्वरूप के अनुसार, स्वभाव के अनुरूप। यह शब्द अनियमित रूप से व्युत्पन्न है। 'यथास्वे यथायथम' सूत्र से द्विभाव हुआ, अव्ययीभाव समास और नपुंसकलिंग हुआ। विभज्य = बाँटकर वि + भज + क्त्वा (ल्यप्) (समपक्षपातया भक्त्या = समान पक्षपात वाली भक्ति से, समान अनुराग रखते हुए, एक जैसी दृष्टि से। पक्षे पातः पक्षपातः। समः पक्षपातः यस्यां सा समपक्षपाती, तया। भक्त्या = भज + क्तिन् प्रत्यय (भावे) भक्तिः, तया। धर्म, अर्थ, काम तीनों के प्रति समान ध्यान रखने से। गुणानुरागात् सख्यम् ईयिवान् इव - गुणों के अनुराग के कारण मित्रता सी प्राप्त करके, मित्र जैसे बनकर। गुणेषु अनुरागः गुणानुरागः,

तस्मात् । अनुरागः = अनु + रञ्ज् + घञ् (भावे)
सख्यम् = सखि + य, 'सख्युर्यः' सूत्र से । ईयिवान् =
प्राप्त करता हुआ, पहुँचाता हुआ, इ + लिट् + क्वसु
'उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च' सूत्र से 'उपेयिवस्' के
अर्थ में 'ईयिवस्' रूप भी बनता है। न बाधते =
बाधा नहीं पहुँचाता, बाध् + लट् । अस्य त्रिगणः = इसके
धर्म, अर्थ, काम तीनों का समूह । त्रयाणां गणः
त्रिगणः ('बाधते' का कर्त्ता) । परस्परम् = एकदूसरे को
यह समास शब्द नहीं है। परम् का द्वित्व 'कर्मव्यतिहारे
सर्वनाम्नो द्वे वाच्ये समासवच्च बहुलम्' वार्तिक से
होता है। इति ।